'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 | अंक 7 | 19 जून, 2019 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

तीर्थराज पुष्कर में बालिका शिविर सम्पन्न

'डूबें नहीं, त्राण करें : अपनी पतवार को थामे रहें'

हमें आज शिविर से विदा लेकर संसार में जाना है। आना व जाना संसार का नियम है जो सब पर लागू होता है। इन सात दिन में संघ के पास जो धन था उसे आपके बीच बांटा गया। आप सब में जागरण की एक लहर पैदा की है, प्रसन्नता एवं खुशी का बीजारोपण किया है। अब संसार में जाना है, जहां यहां के दिशा निर्देशों के अनुरूप जीवन जीना है। आपको संसार में डूबना नहीं है बल्कि जो डूबे हुए हैं उनका त्राण करना है, बाहर निकालना है और इसके लिए अपनी पतवार को थामे रखना है। आप लोगों ने अपनी दरिद्रता को यहां हटाया है अब संसार में जा रही है, पुनः दरिद्र नहीं बनना है बल्कि संसार की दरिद्रता को हटाना है। अपने आपका स्वागत करो कि संसार में जा रही हो, संघ का संदेश लेकर।

तीर्थराज पुष्कर के जयमल कोट में आयोजित मा.प्र.शि. (बालिका) में विदाई संदेश देते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि विदाई हमेशा उदासी लाती है, आंसू लाती है यह स्वाभाविक है लेकिन आपको आंसूओं को पीकर खार पैदा करना चाहिए। अपने आप के प्रति खार पैदा करें, अपनी कमजोरियों के प्रति खार पैदा करें कि मेरे जीवन में अपेक्षित बदलाव क्यों नहीं आ रहा। उन्होंने बालिकाओं से कहा कि आपने इन सात दिन में समझा है कि क्षत्रिय होने के नाते आपकी विशेष जिम्मेदारी है, उस जिम्मेदारी के अहसास को कभी भूलें नहीं। संघ अपनी मंथर गति से निरन्तर चल रहा है, आप इस बगीचे की ऐसी पुष्प बनें जो कभी मुरझाए नहीं, संघ का संदेश अपने हृदय में समेट लेवें और अपने आपको चरित्र एवं शक्ति का पूंज बनावें। शिविर के दौरान आपके मन में जो विभिन्न प्रकार के संकल्प जगे हैं उन्हें प्रकट नहीं करें अन्यथा अहंकार आ जाएगा लेकिन उन्हें सदैव प्रज्वलित रखें। जिस प्रकार आम का पेड़ फल लगने पर झुक जाता है उसी प्रकार विनय से झुकें। समस्त शास्त्रों के सार रूप गीता एवं उत्तरों के रूप में रामचरित मानस के उत्तरकांड में मिले उत्तरों का अध्ययन करें एवं अपने जीवन को तद्नुकूल बनाने में प्रवृत्त रहें। जब भी अपने आपको कमजोर होता महसूस करें पुनः लौट आएं, संघ आपका स्वागत करने सदैव उत्सुक रहेगा। 31 मई को प्रारम्भ हुए इस शिविर में राजस्थान एवं गुजरात के विभिन्न जिलों के अलावा उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश की 365 बालिकाएं शामिल हुईं। शिविर का संचालन जागृति बा हरदासकाबास ने सहयोगियों की सहायता से माननीय संघ प्रमुख श्री के मार्गदर्शन में किया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'जिसे सम्मान की चाह नहीं, उसे मिलता है सम्मान'

(शिक्षाविद् कमलसिंह चूली का सम्मान समारोह)

कमलसिंह जी को सम्मान की चाह नहीं इसीलिए आज इन्हें सम्मान मिल रहा है। वास्तव में सम्मान का अधिकारी वही होता है जिसे सम्मान की चाह नहीं होती। अपने से बड़े द्वारा दिया गया सम्मान प्रेरणादायी होता है और सबसे बड़ा परमेश्वर होता है। उनका सम्मान कमलसिंह जी को मिला हुआ है इसलिए इनको किसी सम्मान की चाह नहीं है लेकिन फिर भी इस छात्रावास के वर्तमान व पूर्व विद्यार्थियों का अपने मार्गदर्शक के प्रति आदर भाव आज यहां प्रकट हो रहा है, जो प्रशंसनीय है। बाड़मेर के मल्लीनाथ राजपूत छात्रावास में विगत 50 वर्ष से व्यवस्थापक के रूप में सेवा दे रहे संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक कमलसिंह के सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। (शेष पृष्ठ 7 पर)

नूतन पुरातन मिलन शिविर संपन्न

संघ का नूतन पुरातन मिलन शिविर 7 जून से 10 जून तक भारतीय ग्राम्य आलोकायन के बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में सम्पन्न हुआ। शिविर में संघ के वरिष्ठतम स्वयंसेवक से लेकर नवीनतम स्वयंसेवक तक 500 से अधिक शिविरार्थी शामिल हुए। शिविर में पूज्य तनसिंह जी के प्रारंभिक साथी 92 वर्षीय चैनसिंह बैठवास से लेकर नवीनतम पीढ़ी के अनेक 16-17 वर्षीय युवक भी शामिल हुए। 92 वर्षीय बलवंतसिंह पांची से लेकर अजीतसिंह धोलेरा, शिवबक्ष सिंह चुई, भवानीसिंह सूई, इन्द्रसिंह राणीगांव, नारायणसिंह खिरजां जैसे वयोवृद्ध स्वयंसेवकों का भी नूतन स्वयंसेवकों को सान्निध्य मिला। सभी आपस में परिचित हुए, अनुभवों को साझा किया एवं संघ के पारिवारिक भाव को दृढ़ता प्रदान की। शिविर के अंतिम दिन माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि हमारे दृष्टिकोण में कोई दोष नहीं आने दें। नजर के सामने आने वाला तिनका भी पहाड़ को ढक लेता है इसलिए किसी प्रकार का पर्दा न रखें। स्वर्गीय स्वरूपसिंह खुड़ी ने संघ के लिए संघशक्ति में एक लेख लिखा था, 'नान्य पंथा'। इस बात को सदैव स्मरण रखें कि हमारे लिए इसके अतिरिक्त कोई अन्य पंथ नहीं है। यह स्वीकार कर लें कि यदि किसी का भी भला करना है तो मुझे ही करना है। संसार के कल्याण का मार्ग मुझसे से ही निकलता है। पूज्य तनसिंह जी ने कहा था कि भगवान ने हमें संसार में भेजा है, उससे गुजरकर ही पार जाना है।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

देशभर में मनी प्रताप जयंती

भारतीय पंचांग अनुसार ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया तद्नुसार 6 जून को भारत भर में महाराणा प्रताप की जयंती मनाई गई। विभिन्न संगठनों, विभिन्न समुदायों द्वारा स्वतंत्रता एवं स्वाभिमान के वैश्विक प्रतिमान को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। अनेक स्थानों पर रैलियां निकाली गईं, सभाएं आयोजित की गईं। विभिन्न स्थानों पर स्थित प्रताप प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। जयपुर में संघ के स्वयंसेवक प्रेमसिंह वनवासा के संयोजकत्व में प्रतिवर्ष जयंती मनाई जाती है। इस बार के कार्यक्रम में संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह सरवड़ी मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। प्रस्तुत है उनके उद्बोधन का संपादित स्वरूप -

राणा सांगा की मृत्यु के पश्चात मेवाड़ की स्थिति गंभीर हो गई। सैन्य शक्ति क्षीण हो गई। उनके बड़े पुत्र भोजराज की मृत्यु सांगा के जीवित रहते ही हो गई थी। द्वितीय पुत्र रतनसिंह शासक बने। वे प्रबल थे लेकिन अहंकार वश सूरजमल हाड़ा से लड़कर मारे गए। तीसरे पुत्र विक्रमादित्य अयोग्य शासक थे। सामंत उन्हें छोड़कर चले गए। दासीपुत्र बनवीर ने उनकी हत्या कर शासन हथिया लिया। शेष बचे एक मात्र पुत्र उदयसिंह को पन्नाधाय ने अपने पुत्र की जान देकर बचाया। उदयसिंह को बनवीर के डर से किसी ने अपने यहां रखने की स्वीकृति नहीं दी। अंत में अपनी माता के कहने पर कुंभलगढ़ के सामंत आशाशाह ने उन्हें अपने यहां रखा। अन्य सामंतों को पता चलने पर वे भी साथ आए और मजबूत सैन्य शक्ति बनाकर बनवीर को खत्म किया। अकबर की नजर मेवाड़ पर लगी हुई थी। वह कुंभलगढ़, चित्तौड़, गोगुंदा व उदयपुर पर बार-बार हमले करवा रहा था। उदयसिंह कुंभलगढ़ छोड़ चित्तौड़गढ़ आ गए। अकबर की सेना ने चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण किया और महीनों तक घेरा डाले रखा। सामंतों ने आग्रहपूर्वक उदयसिंह एवं प्रताप को किले से बाहर भेज दिया एवं मेवाड़ के भाणजे जयमल जी को किलेदार नियुक्त किया। जौहर व शाका हुआ एवं एक ही दिन में अकबर की सेना द्वारा दुर्ग के अन्दर 30000 निर्दोषों का कत्लेआम किया गया। उदयसिंह गोगूंदा में जाकर रहे। उनकी मृत्यु पर जगमाल दाह संस्कार में न जाकर गद्दी पर बैठा। प्रताप जानते हुए चुप रहे क्यों कि गृह कलह से बचना चाहते थे। दाह संस्कार से लौटने पर प्रताप के मामा मानसिंह सोनगरा ने चूंडा के वंशज कृष्णदास से कहा कि आपकी सहमति के बिना कोई मेवाड़ का शासक नहीं बन सकता। कृष्णदास ने रावत सांगा के साथ मिलकर जगमाल को गद्दी से हटाया और प्रताप को बिठाया। औपचारिक रूप से कुंभलगढ़ में राज्याभिषेक किया गया। 1572 में उदयसिंह का देहांत हुआ लेकिन अकबर से संघर्ष जारी रहा। प्रताप जगह बदलते रहे। अकबर ने जलाल खां मोरची को पहली बार संधि के लिए भेजा। उसके बाद दूसरी बार मानसिंह, तीसरी बार भगवानदास एवं चौथी बार टोडरमल आए। लेकिन प्रताप को संधि की गुलामी भरी शर्तें मंजूर नहीं थी। अकबर अजमेर आया एवं मानसिंह व आसफ खां को सेनापति बनाकर सेना भेजी। मुगल सेना प्रताप को मैदान में लाना चाहती थी लेकिन प्रताप पहाड़ों में डटे रहे। मांडलगढ़ पहुंचकर

अकबर की सेना दो माह तक पड़ी रही। मजबूर होकर मुगल सेना हल्दीघाटी की ओर बढ़ी। एक प्रातः प्रताप ने प्रबल आक्रमण किया और मुगल सेना भागने लगी। पांच मील पीछे हटने पर मेहतर खां द्वारा अकबर के आने की अफवाह फैला कर सेना का जोश बढ़ाया व वापिस लौट कर युद्ध किया। प्रताप के पास अकबर की एक चौथाई सेना थी। फिर भी जबरदस्त युद्ध हुआ। दोनों तरफ भयंकर नुकसान हुआ। रामशाह तंवर अपने तीनों पुत्रों सहित काम आए। झाला मानसिंह ने अधिकार पूर्वक मृत्यु का वरण किया। यहां अकबर की जीत बतायी जाती है तो यदि अकबर जीत गया तो बार-बार आक्रमण क्यों करता रहा? प्रताप ने शेष बची मुगल सेना का रसद का मार्ग काट दिया। मुगल सेना कच्चे आम खाकर बीमार हुई। उन्हें हल्दीघाटी छोड़कर गोगूंदा जाना पड़ा। क्या यह जीत है? अकबर के दरबार में मानसिंह व आसफ खां का आना बंद कर दिया गया, क्या यह जीत थी? अकबर महाराणा को जिंदा या मुर्दा पकड़ना चाहता था, क्या पकड़ पाया? प्रताप का लक्ष्य अकबर की सेना का अधिकतम नुकसान करना था जो उन्होंने किया। इसके बाद हर वर्ष युद्ध हुए। 1576 में जगन्नाथ कच्छवाहा सेना लेकर आए। अब्दुल रहीम खानखाना आए। शाहबाज खां कई बार आया। खानखाना को मेवाड़ की सीमा में प्रवेश से पहले ही अमरसिंह ने रोक दिया। उसकी बेगमों का हरण कर लिया। प्रताप अमरसिंह से नाराज हुए एवं सजा के तौर पर स्वयं जाकर उन महिलाओं को उनके शिविर में छोड़ने का आदेश दिया और कहा कि वे यदि तुम्हें मारते हैं तो यह तुम्हारी सजा है। अधिकांश बार मुगल सेना कुंभलगढ़ से आगे नहीं बढ़ पाई। जैसे ही वापिस जाती महाराणा उन प्रदेशों को वापिस जीत लेते। गोगूंदा को पुनः जीता। सात बार युद्ध हुआ, सातों बार पुनः जीत लिया। शाही थानों पर लगातार हमले करते रहे। अंत में अकबर ने थककर हाथ खींच लिए। प्रताप ने मांडलगढ़ व चित्तौड़ को छोड़कर शेष पूरे मेवाड़ पर कब्जा कर लिया। ऐसे में जीत किसकी? अकबर कभी प्रताप से लड़ने सम्मुख युद्ध में नहीं आया। प्रताप और उसकी क्या बराबरी? महान बताने वालों के अपने स्वार्थ हैं। हमें उन स्वार्थों में न जाकर प्रताप के जीवन को देखना है कि इतने संकट झेलकर भी कैसे दृढ़ प्रतिज्ञित होकर अपने मूल्यों पर रहे। मानवीय मूल्यों को स्थापित किया। अंत में 1597 में चांवड़ में उनका देहांत हुआ। वे राष्ट्रभक्त थे, कर्तव्य निष्ठ थे। मैं राष्ट्र की अस्मिता का हरण नहीं करने दूंगा इसलिए मेरा दायित्व बनता है कि कुछ भी हो जाए इसकी अस्मिता की रक्षा करनी है। ऐसा स्वाभिमान कि मेरा सिर केवल एकलिंग के सामने झुकेगा। सामान्य जीवन जीया। कभी अकबर की तरह ऐशो आराम में नहीं जीए। वनवासियों के साथ रहे। रणनीतिज्ञ ऐसे कि छापामार युद्ध प्रणाली द्वारा अकबर के छक्के छुड़ाए। भारत का गौरव उज्ज्वल रखा। इसीलिए आज भी उन्हें याद करते हैं। महानता की पहचान गुणों से होती है विस्तार से नहीं। सच्चे क्षत्रिय थे। राजस्थान के शिक्षा मंत्री कहते हैं कि उन्हें महान नहीं शौर्यवान कहेंगे लेकिन शौर्य तो वीरप्पन में भी था? दो-दो राज्यों की पुलिस नहीं पकड़ पाई। रावण, कंस में भी शौर्य तो बहुत था। मानसिंह भी इतने बहादुर थे कि अफगानिस्तान से लेकर आसाम तक अपनी तलवार का लोहा मनवाया, सब जगह जीते लेकिन वह बहादुरी काम किसके आई? प्रताप के तेज के सामने अकबर की सेना कांपती थी। धैर्यपूर्वक 25 वर्ष तक संघर्ष किया। दक्षता एवं चतुराई के बल पर मुगलों को हराया। कभी संघर्ष से मुंह नहीं मोड़ा। ईश्वरीय भाव के कारण सभी को समान रूप से पाला। ऐसा व्यक्ति महान होगा या लूटने वाला महान होगा? मानसिंह शिकार पर आए, साथियों ने कहा अकेले हैं, हमला करें। प्रताप ने कहा कि गाफिल शत्रु पर धोखे से वार करना क्षात्रधर्म नहीं। ये महानता है। 30 हजार निर्दोष लोगों का कत्लेआम करने वाला महान कैसे? अमरसिंह को मुगल बेगमों को छोड़ने वापिस भेजा, दूसरी तरफ अकबर मीना बाजार लगाता था। जिसे जीतता था उसे अपनी बहन बेटी का विवाह स्वयं से करने को मजबूर करता था, क्या स्त्री का सम्मान न करने वाला महान होता है? क्या वह प्रताप के जैसा कष्ट सहिष्णु था? प्रताप सभी क्रांतिकारियों के प्रेरणास्रोत रहे। गणेश शंकर विद्यार्थी ने उनके नाम से अखबार प्रारंभ किया। विदेशी लोग आज भी उनके बारे में जानने को उत्सुक रहते हैं। पूरा संसार उनका सम्मान करता है। कुछ गलत फहमिया प्रताप के बारे में फैली हुई हैं। जैसे भामाशाह ने उन्हें अपना धन दिया था। वास्तव में भामाशाह ने मेवाड़ का धन ही उन्हें सौंपा था। भामाशाह के पिता भारमल को सांगा ने अपना खजांची बनाया था। मालवा को लूटने भामाशाह व उसके भाई ताराचंद को प्रताप ने ही सेना देकर भेजा था। वही धन उन्होंने प्रताप को सौंपा। उनकी अपनी महानता है कि उन्होंने राज्य के धन को अपना नहीं माना और मरने से पूर्व पूरा हिसाब अपनी पत्नी को देकर महाराणा को देने को कहा। इसी प्रकार की गलतफहमी एक कविता के कारण प्रताप के निराश होकर पत्र लिखने की है जबकि वह पत्र अकबर द्वारा कूटरचित था और प्रताप ने पृथ्वीराज को इस संबंध में जवाब भी भेजा था। हम ऐसे महान पुरुष की जयंती मना रहे हैं यह सार्थक तब ही होगी जब हम हमारे अंदर बैठे अकबर और प्रताप को पहचान सकेंगे एवं दुष्प्रवृत्ति को नष्ट कर सकेंगे।

अनुरागसिंह ठाकुर

वित्त एवं कार्पोरेट मामलात राज्यमंत्री

अनुराग ठाकुर ने 30 मई 2019 को मंत्री पद की शपथ ग्रहण कर केन्द्र सरकार में वित्त एवं कार्पोरेट विभाग के राज्यमंत्री के रूप में कार्यभार संभाला है। अनुराग सिंह ठाकुर सुपुत्र प्रेमकुमार धूमल, पूर्व मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश, समीरपुर जिला हमीरपुर हिमाचल प्रदेश के मूल निवासी है। आपका जन्म 24 अक्टूबर 1974 को हुआ था। आपने स्नातक की पदवी दोआब महाविद्यालय जालंधर से प्राप्त की थी। आप क्रिकेट के ख्याती प्राप्त खिलाड़ी हैं जिनको मई 2016 से फरवरी 2017 तक बीसीसीआई के अध्यक्ष रहने का गौरव प्राप्त है। राजनीति आपको विरासत में मिली है। आप भारतीय जनता युवा मोर्चा के पूर्व अध्यक्ष हैं। अनुराग ने 'राष्ट्रीय एकता यात्रा' के बेनर तले कोलकत्ता से श्रीनगर तक की यात्रा का नेतृत्व किया और 26 जनवरी 2011 को श्रीनगर के लालचौक में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। आप 2008 में हमीरपुर से लोकसभा का उपचुनाव जीत कर लोकसभा में सांसद बने फिर 2009, 2014 और 2019 में वहीं से जीतकर अब मंत्री परिषद में राज्यमंत्री का पद प्राप्त किया है। अनुराग ठाकुर भारतीय जनता पार्टी के पहले सांसद है जिन्होंने 2016 में प्रादेशिक सेना में रेगुलर कमीशन प्राप्त किया है। लोकसभा में आप बीजेपी के मुख्य सचेतक भी रहे हैं। 2011 में आपको श्रेष्ठ युवा सांसद के अवार्ड से नवाजा गया था। 2019 में आपको सांसद के रूप में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सांसद रत्न अवार्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया। हिमाचल प्रदेश की जनता के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करते हुए अनुराग सिंह ठाकुर ने 'सांसद रत्न अवार्ड' प्रदेश के लोगों को समर्पित कर दिया है।

- कर्नल हिम्मतसिंह पीह

उप मुख्यमंत्री एवं विधानसभाध्यक्ष को ज्ञापन सौंपा

सरकार द्वारा आर्थिक आधार पर वंचित वर्ग के लिए दिए गए 10 प्रतिशत आरक्षण की विसंगतियों को दूर करने के लिए श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की केन्द्रीय टीम द्वारा 4 जून को राजस्थान के उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट एवं राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष सी.पी. जोशी को ज्ञापन सौंपा गया। दोनों से ही निवेदन किया गया कि आर्थिक आधार पर आरक्षण की शर्तें तय करना राज्य सरकार के क्षेत्राधिकार में आता है अतः वे सरकार में इस बाबत चर्चा कर इसकी शर्तों को राजस्थान राज्य के परिप्रेक्ष्य में व्यवहारिक बनवाएं। दोनों ने ही उचित सहोयग का आश्वासन दिया।

मांडण युद्ध स्मृति दिवस मनाया

रेवाड़ी के पास मांडण नामक स्थान पर 6 जून 1775 को शेखावतों एवं शाही सेना के बीच हुए युद्ध की स्मृति में 6 जून को झुंझुनूं जिले के सुल्ताना गांव में समारोह आयोजित हुआ। उल्लेखनीय है कि शेखावतों की सभी खांपों के वीर योद्धाओं सहित जयपुर व भरतपुर की सहयोगी सेना को साथ लेकर लड़े गए इस युद्ध में शाही सेना की हार हुई एवं उन्हें मैदान छोड़कर भागना पड़ा। इस युद्ध में अनेक शेखावत परिवारों की तीन-तीन पीढ़ियां काम आईं थी। उन्हीं वीरों की स्मृति में विगत वर्षों में स्मृति दिवस मनाना प्रारम्भ किया है। सुल्ताना के श्याम गेस्ट हाउस में आयोजित इस कार्यक्रम में यशवर्धनसिंह झेरली, वीरपाल सिंह गुढ़ा, हर्षसिंह आदि वक्ताओं ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। वक्ताओं ने युद्ध के इतिहास पर प्रकाश डाला एवं उन वीरों के त्याग व बलिदान से प्रेरणा लेने की बात कही। सभी ने क्षत्रियोचित संस्कारों के सींचन हेतु श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविरों में युवाओं एवं युवतियों को भेजने का आह्वान किया। शिक्षा एवं संस्कार दोनों की महत्ती आवश्यकता पर बल दिया। सुल्ताना के समाज बंधुओं की मेजबानी में हुए इस कार्यक्रम में सुल्ताना के अतिरिक्त आसपास के गांवों के समाजबंधु भी उपस्थित रहे।

नूतन पुरातन... पृष्ठ एक का शेष....

समाज हमारा निकटस्थ संसार है ऐसे में समाज की उपेक्षा कर कैसी साधना? भगवान ने हमारा जो कर्तव्य बताया है उससे विलग होकर कार्य करेंगे तो विचलन होगा। ईश्वर की ओर बढ़ने के लिए अंतःकरण की शुद्धि आवश्यक है और सद्कर्मों से अंतःकरण की शुद्धि होती है और स्वधर्म पालन सबसे बड़ा सद्कर्म है। उन्होंने कहा कि संघ आपको प्रसन्न देखकर प्रसन्न होता है। आप ही संघ हैं और संघ ही आप है। संघ से जुड़ने के बाद भी हम परिस्थिति वश इधर-उधर हो जाते हैं लेकिन हम सब संघ से बंधे हुए है। इससे पूर्व विभिन्न कार्यक्रमों में संघ प्रमुख श्री ने कहा कि अपनी कमजोरी को परमेश्वर के समक्ष उद्घाटित करने में संकोच करते हैं तो भटकने का खतरा रहता है। सखा भाव संघ यात्रा का विश्वस्त सहयोगी है लेकिन विकृत होने पर यह सबसे बड़ा बाधक भी बनता है। हमारा सखा भाव कृष्ण और अर्जुन की तरह होना चाहिए। पुरुषार्थ के बल पर होनहार को बदला जा सकता है, जो हो रहा है उसे होने दें यह पशुवत जीना है, पुरुषार्थ नहीं है। तनसिंह जी ने कहा कि संघ ईश्वरीय कार्य है जो होकर रहेगा, तुम जितना सहयोग करोगे उतना ही तुम्हारा पुरुषार्थ है। एक अन्य कार्यक्रम में संघ प्रमुख श्री ने कहा कि संघ ने हमारे पैरों में शब्दों की, आचरण की, प्यार की जंजीरे डाल रखी हैं, वह हमें सदैव जोड़े रखने का प्रयास करता है लेकिन हम नादानी में तोड़ने वाला काम कर देते हैं। हमारा सम्यक दर्शन, सम्यक श्रवण एवं सम्यक आचरण ही हमें संघ के साथ चलने में सहयोग करेगा। विश्वामित्र ने ब्रह्मर्षि को देखा, ब्रह्मर्षि को सुना और अंत में ब्रह्मर्षि बन गए। समय लग सकता है, गलतियां हो सकती हैं। जीवन बहुत बड़ा नहीं है इसलिए इसका सम्यक उपयोग आवश्यक है। कभी संघ की परीक्षा लेने की कोशिश न करें, दूरियां बढ़ जाएगी। किसी भी प्रकार का संशय न पालें एवं संघ के दृष्टिकोण को व्यक्तिगत दृष्टिकोण न मानें, व्यक्ति बदलते रहते हैं पर संघ चलता रहता है।

शिविर में एक दिन राज राजेश्वर संस्थान क्षत्रिय पीठ उड्डपी (कर्नाटक) के संत विश्वाधिराज तीर्थ का सानिध्य मिला। स्वामी जी अपनी निजी यात्रा पर राजस्थान आए हुए थे एवं जानकारी मिलने पर शिविर में आए। उन्होंने कहा कि संसार की सभी समस्याओं का हल क्षत्रिय की स्वाभाविक वृत्ति के द्वारा ही हो सकती है। वे इसके लिए प्रयासरत हैं लेकिन संघ का इस संबंध में व्यवहारिक शिक्षण देखकर उन्हें अतीव प्रसन्नता हुई है और वे साथ काम करने को प्रस्तुत हैं। उन्होंने बताया कि महाभारत क्षात्रधर्म की सम्पूर्ण परिभाषा है। उसका यथार्थ रूप में पढ़ा जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि उनके सम्पूर्ण मिशन का आधार महाभारत है।

शिविर में सगाई

शिविर में अंतिम दिन संघ के स्वयंसेवक कालूसिंह गंगासरा के पुत्र महेशपालसिंह की सगाई संघ के स्वयंसेवक मेहताबसिंह फलसूंड की पुत्री के साथ संपन्न हुई। मेहताबसिंह संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक गिरधारीसिंह धोलिया के जंवाई हैं। दोनों परिवार संघ से जुड़े हुए हैं। महेशपालसिंह जोधपुर कार्यालय तनायन में रहते हैं व संघ के स्वयंसेवक हैं। इस समय दोनों स्वयंसेवकों को संघ प्रमुख श्री सहित पूरे शिविर का सानिध्य मिला।

मिलने पहुंचे गणमान्य लोग

शिविर के दौरान बाड़मेर प्रवास पर आए पूर्व मंत्री राजेन्द्रसिंह राठौड़, उच्च शिक्षा मंत्री भंवरसिंह भाटी, नवचयनित आई.ए.एस. दिलीप प्रताप सिंह आदि माननीय संघ प्रमुख श्री से मिलने पधारे एवं आवश्यक सामाजिक चर्चा की।

प्रणेता की छतरी को नमन

संघ प्रमुख श्री शिविर के सभी शिविरार्थियों को लेकर संघ के प्रणेता पूज्य तनसिंह जी की छतरी पर पहुंचे। सभी ने अपने प्रणेता को नमन कर उनके बताए मार्ग पर निष्कंटक रूप से चलने की शक्ति देने की प्रार्थना की।

संपादकीय Column

जो खोया वह भूल गए क्यों?

संघ के शिविरों में स्वागत के समय तिलक करते हुए एक गीता गाया जाता है 'रक्त तिलक कर ले...'। यह गीत पूज्य तनसिंह ने 31 अक्टूबर 1962 को माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर जीण माता के दौरान लिखा। इसी गीत की पंक्ति है, 'कुछ पाकर यों फूल गए क्यों, जो खोया वो भूल गए क्यों... अंदाजे मन के।' विगत दिनों में एक सामाजिक बैठक में इस पंक्ति के दर्शन हुए। कार्यक्रम में वक्ता लोग आत्म मुग्धता में बहे जा रहे थे एवं अपनी उपलब्धियों का बखान किए जा रहे थे। कोई कह रहा था कि हमारे जिले में हमारे इतने सरपंच हैं। कोई कह रहा था कि हमारे इतने प्रधान है। कोई कह रहा था कि हमने इतनी संस्थाएं बना ली हैं तो कोई कह रहा था कि मैं इतनी संस्थानों का अध्यक्ष हूं। एक वक्ता तो सोशल मीडिया के सावधानी पूर्वक उपयोग की शिक्षा देते-देते यह कह रहे थे कि हमें गर्व करना चाहिए कि पूरा देश हमारी मुट्ठी में है, रक्षा मंत्री हमारे हैं और तीनों सेनाओं के प्रमुख भी हमारे हैं। कोई कह रहा था कि राजपूत हमारा ब्रांड नेम है और उसके कारण शेष सभी कौमें हमे स्वाभाविक रूप से नेता मानती हैं। यह सब सुनकर पूज्य तनसिंह जी द्वारा लिखी ये पंक्तियां याद आ रही थीं और लग रहा था कि यह कैसी आत्म मुग्धता है। कोई हमें अच्छा कहे या नहीं कहें, हम स्वयं ही अपने आपको प्रमाण-पत्र दिए जा रहे हैं और मंच से गर्व पूर्वक उन प्रमाण-पत्रों को पुष्ट भी कर रहे हैं। इसे आत्म मुग्धता कहें कि हीन भावना, यह भी समझ में नहीं आ रहा है। जो अपने आपको मार्गदर्शक की भूमिका में लाकर लोगों को सोशल मीडिया के सदुपयोग की शिक्षा दे रहे हैं वे ही सोशल मीडिया पर अर्जित ज्ञान के बल पर सिक्ख नौ सेना अध्यक्ष को राजपूत घोषित कर गर्व करने को प्रेरित कर रहे है। और आश्चर्य इस बात का कि सामने बैठे श्रोता उनकी बात पर लगातार तालियां बजा रहे हैं। तब लगता है कि हम लोग पूज्य श्री की ऊपर लिखित बात को कब समझेंगे? अपने अपने मन के अंदाजों के आधार पर हमने अपने अपने तरीके से समाज के बारे में मापदंड तय कर लिए हैं। हम सभी जमाने से इतने अधिक प्रभावित हो गए हैं कि हमारे ही पूर्वजों द्वारा स्थापित की गई मर्यादाओं के ऊपर अर्द्धविकसित लोगों द्वारा तय किए गए मापदंडों को प्राथमिकता दे रहे हैं और उन मापदंडों में हासिल उपलब्धियों पर आत्म मुग्ध हुए जा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि महाराणा प्रताप की जयंती पर भी हम येन केन प्रकारेण अर्थ कमाने की बात करते हैं। सुख सुविधाएं जुटाने की बात करते हैं। येन केन प्रकारेण सत्ता हासिल करने की बात करते हैं। येन केन प्रकारेण और महाराणा प्रताप एक दूसरे के विलोम हैं। येन केन प्रकारेण सुविधा भोगी बनना है तो फिर हमारे आदर्श महाराणा प्रताप कैसे हो सकते हैं लेकिन विडंबना यह है कि हमें अच्छे तो महाराणा प्रताप लगते हैं और हम व्यवहार उनके जीवन के आदर्शों के विपरीत करते हैं। तब ऐसा लगता है कि हम कुछ थोड़ा सा पाने के चक्कर में जो खोया है और जिसे खोते जा रहे हैं उसको भूल रहे हैं। भूलने की प्रक्रिया इतनी तीव्र है कि हम यह मानने को भी तैयार नहीं हैं कि हम भूल रहे हैं। इसीलिए तो पूज्य तनसिंह जी ने लिखा कि 'गुमराह हठीलों के प्रांगण में, मैं अलग जगाने आया हूं।' हम गुमराह हैं पर हठीले भी हैं इसलिए मानते नहीं कि गुमराह भी है और जो यह मानता नहीं कि वह गुमराह है उसे राह पर लाना कितना कठिन होता है यह हम सब जानते हैं। हमारी यह स्थिति है इसीलिए हमारा लक्ष्य येन केन प्रकारेण पांच वर्ष तक सरपंच बनना हो गया है और सरपंच बनकर हम इतने आत्ममुग्ध हो जाते हैं कि भूल जाते हैं कि सरपंचाई उस नेतृत्व के समक्ष कुछ नहीं है जो हमें पीढ़ी दर पीढ़ी स्वाभाविक रूप से मिला करता था लेकिन उसमें और इसमें अंतर इतना ही है कि इसमें येनकेन प्रकारेण जुगाड़ बिठाया जाता है और उसमें स्वतःस्फूर्त नेतृत्व स्वीकारा जाता था या फिर यह कहें कि अंतर इतना बड़ा है कि उसमें अपने आपको योग्य बनाना पड़ता था, तपाना पड़ता था, भोग के लिए नहीं योग के लिए आगे आना पड़ता था और इसमें सब कुछ भोग के ईर्द-गिर्द घूमता है। हमारी नजर योग से भटक कर भोग पर अटकी है इसीलिए थोड़ा सा पाकर भी फूल जाते हैं, आत्म मुग्ध हो जाते हैं, अपने आपको बड़ा मान लेते हैं और जो स्वयं ने थोड़ा बहुत पाया है उसे सर्वस्व मानकर अपने आपको ऊपर उठा हुआ मानने लगते हैं। ज्यों ही व्यक्ति अपने आपको ऊपर उठा हुआ मानने लगता है उसकी नजर अपने से पीछे वालों पर, अपने से नीचे वालों पर अटक जाती है और वह उनकी उस कमी के कारण स्वयं आत्ममुग्धता की स्थिति को प्राप्त होता है और थोड़ा सा पाकर भी फूल जाता है। दैनिक जीवन व्यवहार में ऐसे अनेक अनुभव होते ही रहते हैं। किसी नेता से मिलते है तो वे यह जताते हैं कि उनकी उपलब्धि समाज में सबसे बड़ी उपलब्धि है। किसी अधिकारी से मिलो तो यह जताते हैं कि समाज का भला तो अधिकारी बनने से ही हो सकता है और वह वे बन चुके हैं। किसी व्यवसायी से मिलो तो वे समाज को अपनी उपलब्धि का अनुसरण करने की सीख देने लगते हैं और इन सबका कारण है वह आत्म मुग्धता जिसके तहत अंतरावलोकन की अपेक्षा बाह्यावलोकन प्रारम्भ हो जाता है और उसके तहत बाहर के लोगों की ठाकुर सुहाती सुन सुन कर अपने आपको श्रेष्ठ मानने का मीठा मीठा अहसास ही स्वयं में फंसा कर आत्यंतिक सुख से निरन्तर दूर करता रहता है। पूज्य तनसिंह जी द्वारा प्रदत्त मार्ग हमें इसी आत्म मुग्धता से मुक्त करवाना चाहता है। वह हमें नेता, अधिकारी, व्यवसायी आदि सब बनाना चाहता है लेकिन उससे पहले इंसान बनाना चाहता है। क्षत्रिय बनाना चाहता है। यदि हमारा लक्ष्य इंसान बनना होता है या उससे भी आगे क्षत्रिय बनना होता है तो फिर हम कुछ पाकर फूलेंगे नहीं बल्कि जो खोया है उसे सदैव याद रखेंगे। वह याद व स्मरण हमें उस पाने के लिए प्रेरित करता रहेगा और जो खोया है उसे पाने की याद यदि सदैव बनी रहे तो प्रेरणा कभी क्षीण नहीं होगी, ज्योत निरन्तर जलती रहेगी। संघ उस ज्योत को उसके सम्पर्क में आने वाले लोगों में केवल जागृत ही नहीं करता बल्कि उसे सदैव जागृत रहने के लिए स्वयं को ही तेल, बाती आदि बनने के लिए तत्पर रहने को तैयार करता है। जो जितना तैयार होता जाता है उतनी ही उसकी आत्म मुग्धता पीछे छूटती जाती है और नित नई उपलब्धियों के स्वागत का द्वार सदा के लिए खुला रहता है।

खरी-खरी...

हर बार टूटती है सीमाएं

देश में लोकसभा चुनाव संपन्न हो चुके हैं। चुनाव परिणाम भी आ चुके हैं। चुनाव प्रचार के दौरान विभिन्न राजनेताओं ने विभिन्न प्रकार के बयान दिए। आपस में विरोधियों ने एक दूसरे के इतिहास और वर्तमान को उधड़ने का पूर्ण प्रयत्न किया और आपस में कीचड़ उछालने में कोई कमी नहीं रखी। राजनीतिक समीक्षकों एवं समाचार माध्यमों ने इन आरोप-प्रत्यारोपों को अभूतपूर्व बताते हुए कहा और लिखा कि चुनाव प्रचार में इतना ओछापन पहली बार प्रदर्शित हुआ, प्रचार के स्तर को इतना अधिक पहली बार गिरते देखा। लेकिन क्या समाचार माध्यमों या समीक्षकों ने ऐसा पहली बार लिखा है। विगत कई चुनावों से समाचार माध्यमों एवं समीक्षकों की टिप्पणियां पढ़ते रहे हैं। प्रायः हर बार इसी प्रकार की टिप्पणियां सुनने एवं पढ़ने को मिलती रही हैं हर चुनाव के समय यही कहा जाता है कि सब सीमाएं टूट गई। गिरने के पूर्व के रिकार्ड ध्वस्त हो गए। इस प्रकार इन विश्लेषणों का अध्ययन करें और इनको सही मानें तो पाते हैं कि हर चुनाव में प्रचार का स्तर, आरोप-प्रत्यारोप का स्तर विगत चुनावों से गिरा है और इस प्रकार चुनाव दर चुनाव यह स्तर गिरता जा रहा है। ऐसे में अब आश्चर्य नहीं होता कि इस बार इस प्रकार की टिप्पणियां की गई। साथ ही समाचार माध्यमों के विश्लेषण भी नाटक से ही लगते हैं। जब हर बार ऐसा हो रहा है, निरन्तर गिरते जा रहे हैं, राजनेताओं में गिरने की होड़ मची है तो फिर उनको गिरते देखकर आश्चर्य कैसा? जब नियति ही गिरने की बन गई है तो फिर गिरने पर इतना हाय तौबा क्यों? किसी समाचार माध्यम में ही पढ़ा था कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विगत चुनावों के बाद कहा कि पांच वर्षों में से साढ़े चार वर्ष देश के लिए काम करेंगे और अंतिम 6 माह चुनावों को केन्द्र में रखकर काम किया जाएगा। अर्थात चुनाव के लिए साढ़े चार वर्ष का काम पर्याप्त नहीं होगा बल्कि अंतिम 6 माह में विशेष प्रयास करने पड़ेंगे। यही नियति बन गई है इस लोकतंत्र की। जब सरकार के उस काम के लिए वोट नहीं पड़ें जो उसने देश को केन्द्र में रखकर किया हो और वोट इस बात से प्रभावित हों कि चुनावों को केन्द्र में रखकर क्या किया गया तो फिर स्तर गिरना स्वाभाविक है। जब येनकेन प्रकारेण सत्ता ही साध्य हो तो स्तर गिरना स्वाभाविक है। सत्ता को केन्द्र में रखकर विशेष प्रयास करने पड़े तो स्तर गिरना स्वाभाविक है और जो स्वाभाविक है उसकी चिंता कैसी? इसीलिए विश्लेषकों की चिंताएं नाटक सी लगती हैं। चिंता करनी है तो इस बात करनी चाहिए कि देश के प्रशासकों के बीच चिंता देश को चलाने की हो, चुनाव जीतने की नहीं। यदि चुनाव जीतें तो वे देश के लिए किए जाने वाले काम के बल पर जीतें, चुनाव के लिए किए गए काम के लिए नहीं। यदि ऐसा होगा तो देश केन्द्र में रहेगा और जब देश केन्द्र में होगा तो सत्ता भी आवश्यक नहीं है देश के लिए काम करने को। लेकिन आज तो हर कोई राष्ट्रसेवा करने के लिए राजनीति को ही प्रधान मानता है। राजनीति में आने वाला हर व्यक्ति यही कहता है कि मैं देश सेवा के लिए आया हूं। हर राजनीतिज्ञ अपने आपको समाज सेवक कहता है। जबकि वास्तव में सत्ता सेवा का नहीं बल्कि भोग का माध्यम बन चुकी है और इसीलिए जो सत्ता में है वे सत्ता के जाने की कल्पना से भयभीत हैं और जो सत्ता से बाहर हो चुके हैं वे सत्ता में आने को छटपटा रहे हैं। यह छटपटाहट और भय जब तक रहेगा तब तक प्रचार के स्तर गिरने की चिंता करना नाटक ही प्रतीत होगा।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामानाएं

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक

श्री गजेन्द्रसिंह शेखावत (महरोली)

के केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री

बनने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

शुभेच्छु :

तनेराजसिंह जाड़ी
ॐ सुपर स्टोर्स, सूरत
मो. 8000310077

चतरसिंह मालूंगा
जोधपुर, हाल सूरत
मो. 9327128292

मदनसिंह देणोक
जोधपुर, हाल सूरत
मो. 9327128293

बाबुसिंह सोनु
R. Trendz, Surat
मो. 8758416069

कर्णसिंह मूठली
हाल सूरत
मो. 9587249114

सुरेन्द्रसिंह मूठली
हाल सूरत
मो. 8320196952

सवाईसिंह धूड़ीला
नागौर, हाल सूरत
मो. 9624865191

सुमेरसिंह तेजमालता
श्री माजीसा इम्पेक्स, सूरत
मो. 9374340217

खुमानसिंह मिठोड़ा
पी. राठौड़ एण्ड कम्पनी
सूरत, मो. 9726566862

राजूसिंह काठाड़ी
सोनू टेक्स सूरत
मो. 7878198586

दिलीपसिंह ईडवा
नागौर, हाल सूरत
मो. 9979732369

महावीरसिंह काठाड़ी
हाई पॉपुलर पेन्स, बैंगलोर
मो. 9980264278

विक्रमसिंह मिरगानेणी
वि. आरुषी एण्ड कं.सूरत
मो. 9374826935

लाधुसिंह रेवाड़ा
जैतमाल हाल सूरत
मो. 8469026891

भैरुसिंह भिंयाड़
बाड़मेर, हाल सूरत
मो. 9913760831

उदयसिंह गुजरावास
जोधपुर, श्री शुभ एजेंसी सूरत
मो. 8460432756

हरिसिंह चांदनी
जैसलमेर, श्री लक्ष्मी एजेंसी
सूरत मो. 9409589198

रघुवीरसिंह हड़ाद
हाल सूरत
मो. 9426777741

नारायणसिंह छायण
हाल सूरत
मो. 7878380571

महेन्द्रसिंह चौरड़िया
जोधपुर, न्यू राज मंदिर रेसीडेंसी
सूरत मो. 9825856422

प्रतिभाएं

प्रियंका कंवर : आलसर (चुरु) निवासी जितेन्द्र सिंह की पुत्री प्रियंका कंवर ने विज्ञान संकाय से कक्षा 12वीं में 88.6 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा 2017 में 10वीं की परीक्षा में भी अव्वल रही थी।

अंकिता कंवर : माताजी का भुरटिया (टोक) निवासी महेश सिंह राजावत की पुत्री अंकिता कंवर ने इस वर्ष 12वीं विज्ञान संकाय में 85 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा 10वीं में भी विद्यालय में प्रथम रही थी।

रौनक कंवर : चौक (जैसलमेर) निवासी लूण सिंह की पुत्री रौनक कंवर ने 12वीं विज्ञान संकाय में 96 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

अजयपालसिंह : नांदड़ा निवासी इंदरसिंह के पुत्र अजय पाल सिंह भाटी ने 12वीं विज्ञान में 95 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। विद्यार्थी ने नोखा तहसील में प्रथम स्थान प्राप्त किया हैं।

मगसिंह : राजमथाई निवासी मगसिंह ने 12वीं कला वर्ग में 81 प्रतिशत अंक हासिल किए है। छात्र संघ का स्वयंसेवक है एवं आलोक आश्रम (बाड़मेर) में निवासरत है।

विश्वदीपसिंह : गुजरात के भावनगर जिले की वल्लभीपुर तहसील के गांव पीपली निवासी विरेन्द्र सिंह गोहिल के पुत्र विश्वदीपसिंह गोहिल ने सीबीएसई बोर्ड की 10वीं कक्षा में 95.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सावित्री कंवर : चुरू जिले के घांटियाली बड़ी निवासी शुभकरण सिंह की पुत्री सावित्री कंवर ने 12वीं विज्ञान वर्ग में 98.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा ने भूगोल, अर्थशास्त्र एवं गणित में शत प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

चन्द्रवीरसिंह : संघ के स्वयंसेवक जितेन्द्रसिंह सिसरवादा एवं संतोषकंवर सिसरवादा के पुत्र चन्द्रवीरसिंह ने सीबीएसई की कक्षा 10वीं की परीक्षा में 83.2 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

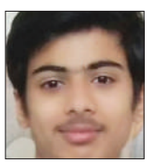

जसवंतसिंह : मूलाना निवासी जसवंतसिंह पुत्र गोपाल सिंह ने 12वीं में 83 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

वीरमसिंह : मूलाना निवासी चन्दनसिंह के पुत्र वीरमसिंह ने 12वीं में 83.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

नीलम कंवर : सिरोही जिले के वाडका निवासी कानसिंह की पुत्री नीलम कंवर देवड़ा ने आरबीएसई से बारहवीं कला वर्ग में 82.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सुरेन्द्र सिंह : सुरेन्द्रसिंह पुत्र सवाईसिंह नाथसर ने 10वीं की परीक्षा में 82.83 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

भैरूसिंह : भैरूसिंह पुत्र सवाईसिंह नाथूसर ने 12वीं की परीक्षा में 83.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

कुलदीपसिंह : कुलदीपसिंह पुत्र उगमसिंह भाटी निवासी बडोड़ा गांव ने कक्षा 12वीं में 85.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

अनिता कंवर : चुरु जिले के राजासर बीकान की छात्रा अनिता कंवर पुत्री महेन्द्रसिंह ने कक्षा 10वीं में 97.17 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

डिंपल कंवर : पुनासा निवासी डिंपल कंवर पुत्री गोडसिंह ने कक्षा 12वीं में 94.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सरस्वती कंवर : सरस्वती कंवर पुत्री वीरेन्द्रसिंह पुनासा जिला जालोर ने कक्षा 12वीं में 82.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

दुर्गा महिला विकास संस्थान की प्रतिभाएं

दुर्गा महिला विकास संस्थान द्वारा संचालित मीरा गर्ल्स स्कूल की बालिका **शीतल कंवर** पुत्री वीरेन्द्रसिंह हुडील ने कक्षा 10वीं में 97.50 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। इसी प्रकार **योगेश कंवर** पुत्री सुरेन्द्रसिंह नाथावतपुरा ने 90.5 प्रतिशत, **रमन कंवर** पुत्री केशरसिंह अगरोट ने 90.17 प्रतिशत, **संतोष कंवर** पुत्री घीसूसिंह कासली ने 88.5 प्रतिशत, **पूजा कंवर** पुत्री कल्याणसिंह ने 88 प्रतिशत एवं **चांद कंवर** पुत्री पूरणसिंह दुजोद ने 87.33 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

शीतल कंवर

योगेश कंवर

रमन कंवर

संतोष कंवर

पूजा कंवर

चांद कंवर

हार्दिक बधाई

सुरेन्द्रसिंह

प्रिय **सुरेन्द्रसिंह** पुत्र **सवाईसिंह** को 10वीं में 82.83 प्रतिशत एवं प्रिय **भैरूसिंह** पुत्र **सवाईसिंह** को 12वीं में 83.40 प्रतिशत अंक हासिल करने पर **हार्दिक बधाई एवं उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं।**

भैरूसिंह

शुभेच्छु : जगमालसिंह भाटी (दादोसा), गांव नाथूसर, हाल निवास बीचला बास, श्री कोलायत, जिला-बीकानेर।

सीकर व जयपुर टीम की बैठक

श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की जयपुर एवं सीकर टीम के साथ 5 जून को केन्द्रीय टीम की बैठक संपन्न हुई। 5 जून को प्रातः 11 बजे जयपुर में आयोजित जयपुर के सहयोगियों की बैठक में आगामी समय की कार्य योजना बनाई गई। बैठक में तय किया गया कि जून माह में विद्याधर नगर विधानसभा की विधानसभा स्तरीय बैठकों का आयोजन कर लिया जाएगा। 10 प्रतिशत आरक्षण के संबंध में जयपुर टीम मंत्रिमंडल के सदस्यों से समय लेकर ज्ञापन देगी एवं विधानसभा के सत्र में समय विधायकों से मिलकर उनसे इस मुद्दे पर सहयोग मांगा जाएगा। सीकर के सहयोगियों की बैठक 5 जून को ही शाम 4 बजे सीकर में रखी गई। लोकसभा चुनावों से पहले सीकर में हुए काम की चर्चा की गई। लोकसभा चुनावों के कारण कार्य की गति में आई शिथिलता को दूर कर पुनः तहसील स्तरीय बैठकें प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया। जून माह में लोसल क्षेत्र की बैठक करने का कार्यक्रम बना।

कृषि वैज्ञानिक राठौड़ सम्मानित

अजमेर जिले के सांपणदा निवासी वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय उदयपुर के पूर्व विभागाध्यक्ष पौध व्याधिकी विभाग रूपसिंह राठौड़ को 1 मई को तमिलनाडु की ग्लोबल इकोनोमिक प्रोग्रेस एंड रिचर्स एसोसिएशन द्वारा भारत रत्न डॉ. राधाकृष्णन गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें फसलों की विभिन्न बीमारियों एवं उनके समेकित नियंत्रण पर उल्लेखनीय शोध कार्यों के लिए दिया गया। राठौड़ ने अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय गोष्ठियों में शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं एवं राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न समितियों के सदस्य रह चुके हैं।

पोकरण संभाग का स्नेहमिलन

संघ के पोकरण संभाग के स्वयंसेवकों का स्नेहमिलन 3 जून को राजपूत छात्रावास पोकरण में रखा गया। स्नेहमिलन को संबोधित करते हुए संभाग प्रमुख गणपतसिंह अवाय ने कहा कि स्वयंसेवकों के चलायमान होने से ही संघ चलायमान होता है। हमारी सक्रियता ही समाज और राष्ट्र में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है। स्नेहमिलन में वर्तमान में चल रहे संघ के 73वें सत्र के शेष समय के लिए कार्य योजना बनाई गई। शाखाओं के विस्तार को लेकर चर्चा की गई एवं दिसम्बर माह तक होने वाले शिविर तय किए गए। फलसूण्ड में मा.प्र.शि. एवं राजगढ़, आसकंद्रा, आऊ, टेपू, बामणु में प्रा.प्र.शि. के प्रस्तावों पर चर्चा की गई। संघ शक्ति, पथप्रेरक के ग्राहक लक्ष्य तय किए गए एवं संघ के विभिन्न प्रकोष्ठों के काम को लेकर चर्चा की गई।

पृष्ठ एक का शेष....

डूबे नहीं... वयोवृद्ध स्वयंसेवक दीपसिंह बेण्यांकाबास पुरुष सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे। शिविर व्यवस्था का जिम्मा संघ की अजमेर टीम ने स्थानीय समाज बंधुओं के सहयोग से संभाला। 31 मई को बालिकाओं का स्वागत करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि संघ व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं है बल्कि मानवता के कल्याण के लिए है। यह पूज्य तनसिंह जी की इस पीड़ा की उपज है कि समस्त संसार को देने वाला क्षत्रिय याचक की भूमिका में आ गया है इसीलिए संसार में दरिद्रता व्याप्त हुई है। आपको यहां शिविर में मर्यादाओं का पालन करना है, अपनी चेतना को जड़ता से चेतनता की ओर ले जाना है। यह कोई पिकनिक नहीं है बल्कि श्रेष्ठ बनने के लिए प्रशिक्षणार्थ प्रवास है। संघ आपको स्वेच्छा से स्वयं का एवं संसार का कल्याण करने में प्रवत्त करेगा, स्वयं को उसके लिए सौंपे। शिविर में 31 घट बनाए गए। आठ पथक बनाए गए एवं 2 समूहों में विभक्त कर प्रवचन आदि दिए गए। शिविर के सामान्य कार्यक्रमों एवं क्रियाकलपों के अलावा माननीय संघ प्रमुख श्री ने बालिकाओं को पाश्चात्य संस्कृति के दुष्प्रभावों से अवगत करवाया। भारतीय संस्कृति एवं शास्त्रों के अनुरूप युवतियों के लिए बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि अच्छी पत्नी वह होती है जो अपने पति को पतित होने से बचाए। श्रेष्ठ पत्नी नेष्ठ पुरुष को भी अपनी तपस्या के बल पर श्रेष्ठ बना सकती है। उन्होंने मातृत्व के महत्व एवं श्रेष्ठ माता बनने के लिए बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में भी बताया। गृहणी के रूप में गृह के प्रबंधन में महिला की भूमिका के बारे में भी विस्तार से बताया। प्रातःकालीन प्रभात संदेश में साधना के क्रमबद्ध सूत्रों के बारे में बताया गया।

जिसे सम्मान... छात्रावास के वर्तमान एवं पूर्व छात्रों द्वारा 9 जून को छात्रावास प्रांगण में आयोजित इस समारोह को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि कमलसिंह जी ने कुम्हार की भांति इस छात्रावास के विद्यार्थियों के जीवन को गढ़ा है। छात्रावास चलाने के लिए 24 घंटे की जागरूकता एवं अहर्निश कर्मनिष्ठा के प्रतीक हैं कमलसिंह। इसीलिए उनके प्रति आदर भाव की भावनाओं का अतिरेक आज इस कार्यक्रम में प्रकट हो रहा है। ऐसी भावनाओं को नकारा नहीं जा सकता इसीलिए ये इसे विनय पूर्वक स्वीकार कर रहे हैं। मंदिर में जाने वाला जैसे मंदिर में जाने से चूकता नहीं है वैसे ही कमलसिंह कभी इस छात्रावास से नहीं चुके। इनको संघ से या तनसिंह जी से सहायता मिली लेकिन इनका मौलिक स्वभाव भी ऐसा ही था और वह स्वभाव इन्हें इनकी माताजी से मिला। इनका अनुशासन जितना कड़ा था, प्यार भी उतना ही सुन्दर था। इन्होंने अपनी सारी श्रेष्ठताएं अपने विद्यार्थियों में वितरित की। ये सदैव इस बात के प्रति जागरुक रहे कि ज्येष्ठ को श्रेष्ठ बना रहना चाहिए क्यों कि ऐसा न करने से पीछे चलने वाले पतित हो जाते हैं। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि योगशास्त्र कहता है कि जो अपरिग्रही होता है उसे रत्न मिलते हैं। आज कमलसिंह को जो मिल रहा है वह इनके त्याग का ही परिणाम है। इनके जीवन में शांति एवं सुख था इसलिए इन्होंने अपने विद्यार्थियों में सुख और शांति वितरित की। आज इस अवसर पर परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि भगवान इनके जैसा पुण्यवान अन्य लोगों को भी बनाए एवं यह परम्परा बनी रहे। ईश्वर इन्हें स्वस्थ रखे एवं दीर्घायु बनाए ताकि लंबे समय तक इनका मार्गदर्शन मिलता रहे। राजस्थान विधानसभा में उपनेता प्रतिपक्ष एवं पूर्व मंत्री राजेन्द्रसिंह राठौड़ ने कहा कि राजनीतिक जीवन में अनेक अभिनंदन समारोहों एवं सम्मान समारोहों में जाना होता है लेकिन आज का अनुभव अद्भुत एवं प्रेरणादायी है। उच्च शिक्षा मंत्री भंवरसिंह भाटी ने कहा कि कमलसिंह का व्यक्तित्व प्रेरणादायी है एवं इनको संघ से व पूज्य तनसिंह जी से जो मिला वह इस छात्रावास में प्रकट हुआ है। नवचयनित आई.ए.एस. दिलीप प्रताप सिंह शेखावत ने छात्रों को उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता जताई। विधयाक हमीरसिंह भायल ने कमलसिंह के व्यक्तित्व से सीख लेने की बात कही। जैसलमेर के पूर्व युवराज चैतन्यराजसिंह ने कमलसिंह के जीवन को प्रेरणादायी बताया। इनके अलावा छात्रावास के पूर्व छात्र कमलसिंह कोटड़ा कमांडेंट बी.एस.एफ, व्यवसायी नारायणसिंह कपूरड़ी, प्रधानाचार्य कमलसिंह राणीगांव ने कमलसिंह चूली का जीवन परिचय एवं अपने छात्रावास जीवन के अनुभव प्रकट किए। इस अवसर पर कमलसिंह चूली ने कहा कि मेरे जीवन को पूज्य तनसिंह जी ने विशेष रूप से गढ़ा। उनका मेरे जीवन पर विशेष प्रभाव रहा। इसके अलावा हिन्दूसिंह जी व रावल उम्मेदसिंह जी ने सदैव मुझे सहयोग दिया जिसके बल पर मैं यह दायित्व निर्वहन कर सका। उन्होंने कहा कि मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता। एक निष्ठा, अनुशासन एवं ईमानदारी हमारे लिए हर मुकाम को संभव बना सकती है। समारोह में धर्मसिंह भाटी द्वारा कमलसिंह के जीवन पर लिखी गई पुस्तक का विमोचन किया गया। प्रवीणसिंह आगोर ने सबका स्वागत किया एवं रावल त्रिभुवनसिंह ने सभी का आभार जताया। समारोह का मंच संचालन मांगूसिंह विशाला व दीपसिंह रणधा द्वारा किया गया। इससे पूर्व 8 जून की शाम को छात्रावास परिसर में पूर्व छात्रों का सम्मेलन रखा गया जिसमें 1000 से अधिक पूर्व छात्र शामिल हुए।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामानाएं

हमारे प्रिय सहयात्री एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक

श्री गजेन्द्रसिंह शेखावत (महरोली)

के **केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री** बनने पर

हार्दिक बधाई एवं उत्तरोत्तर प्रगतिमान रहने की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु :

राजेन्द्रसिंह नाथावत
पुत्र श्री उम्मेदसिंह नाथावत,
ग्रा.पो. अनंतपुरा जैतपुरा, जयपुर
हाल - दुबई

लखनपालसिंह भंवरानी
ग्राम भंवरानी, जिला-जालोर
हाल - दुबई

शिवसिंह
पुत्र श्री यशपालसिंह पुण्डीर
ग्रा.पो. रणखंडी, (छाजु पट्टी) सहारनपुर
उ.प्रदेश हाल - दुबई

अजितसिंह राठौड़
पुत्र श्री लक्ष्मणसिंह राठौड़
ग्राम डाबड़ी जोधा, तह. लाडनूं, नागौर
हाल - दुबई

महेन्द्रसिंह शेखावत
पुत्र श्री लक्ष्मणसिंह शेखावत
ग्राम राजपुरा, तह. दातारामगढ़
सीकर, हाल - दुबई

बन्नेसिंह शेखावत
पुत्र श्री सवाईसिंह शेखावत
ग्रा.पो. मेलुसर, तह. रतनगढ़
जिला-चुरु हाल - दुबई

खेतसिंह
पुत्र श्री भवानीसिंह भाटी, टेकरा
रेवंतसिंह की ढाणी
जैसलमेर, हाल - दुबई

समस्त स्वयं सेवक
श्री क्षत्रिय युवक संघ
शाखा-दुबई

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org